

University in News on 28 March 2024



HINDUSTAN PAGE 7

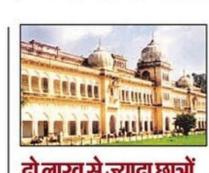
TOI PAGE 3

एलयू के दो लाख छात्रों की एबीसी आईडी बनकर तैयार

संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में अब विद्यार्थियों को स्नातक दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में प्रवेश लेने में आसानी होगी। इसके लिए छात्र-छात्राओं की एबीसी आईडी बनवाई जा रही है। साथ ही परीक्षा देने के लिए भी एबीसी आईडी अनिवार्य कर दिया गया है।

एलयू में सम सेमेस्टर परीक्षा-2024 से परीक्षा फॉर्म भरने के लिए एबीसी आईडी को जरूरी कर दिया गया है। इससे छात्रों को मिलने वाले क्रेडिटस को सुरक्षित रखा जा सकेगा। जिससे यदि कोई छात्र पढ़ाई बीच में छोडकर दोबारा वापस आकर पढना चाहे तो उसे सिर्फ अपनी एबीसी आईडी के क्रेडिट्स दिखाने होंगे। प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव का कहना है कि एबीसी आईडी के जरिए हर छात्र का वर्चअल डाटा रिकार्ड रखने में आसानी होगी। यह प्रक्रिया नई शिक्षा नीति को लचीला बनाने के लिए लाई गई है। इससे छात्र को अपने हिसाब से पढाई पुरी करने का मौका मिलेगा। अगर छात्र के पास एबीसी में पुराने रिकॉर्ड जमा रहेंगे तो वह पढाई छोड़ने के बाद कभी भी दोबारा शुरू कर सकेगा। यानी विद्यार्थियों के पास कॉलेज में मल्टीपल

एंटी और एक्जिट का विकल्प होगा। क्रेडिट की लाइफ अधिकतम सात वर्ष: एबीसी आईडी में ग्रेजुएशन



दो लाख से ज्यादा छात्रों की बनी एबीसी आईडी

एलयू में सत्र 2023-24 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के साथ स्नातक चौथे और छठे सेमेस्टर में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की एबीसी आईडी बनवाई जा रही हैं। एलयु प्रशासन के अनुसार नवप्रवेशित विद्यार्थियों की एबीसी आईडी का कार्य लगभग पुरा हो चुका है। जबिक चौथे और छटे सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं की एबीसी आईडी बनवाई जा रही हैं। अब तक दो लाख से ज्यादा छात्र-छात्राओं की एबीसी आईडी बन चुकी है। जिसे 15 अप्रैल तक चार लाख करने की तैयारी है।

के लिए 3 से 4 साल के आधार पर डॉक्यूमेंटेशन रखा है। एक साल पर सर्टिफिकेट, 2 पर एडवांस डिप्लोमा, 3 साल पर ग्रेजुएट डिग्री और 4 साल के बाद रिसर्च संग ग्रेजुएशन की डिग्री मिलेगी। एबीसी में स्टोर क्रेडिट की

अधिकतम लाइफ सात साल होगी।

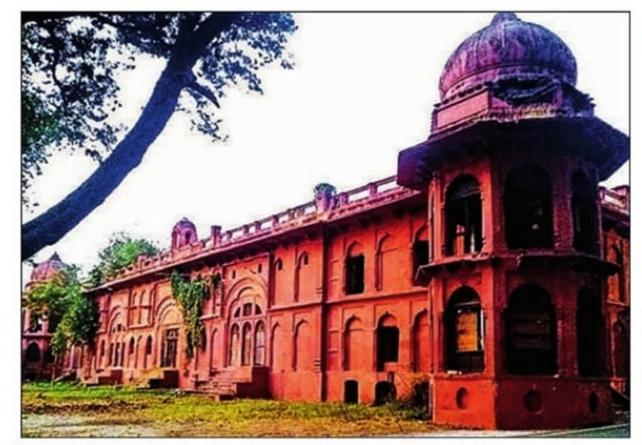
Mohita.Tewari@timesgroup.com

Lal Baradari of LU in for revamp with ₹5 crore grant

Lucknow: Over 200-yearold historical marvel, the Lal Baradari, located in the centre of Lucknow University campus, is in for restoration thanks to Rs 5 crore granted by the university authorities.

According to LU officials, the building will be restored to serve as a beautiful monumental backdrop for the university's open-air theatre, where literature festivals, open mic and other literary events and events will be hosted.

The restoration work will be done with funds granted under Pradhan Mantri Uchchatar Shiksha Abhiyan (PM-USHA). Recently, LU was among universities selected for a grant of Rs 100 crore under PM-USHA.



LU'S PRIDE Lal Baradari is over 200 years old historical marvel

"LU is known for its historical buildings, be it Canning College, which is an Indo-Saracenic architecture made during 'British Raj', or the Lal Baradari, a building of the Nawabi era. These are not just historical structures but an identity that bear testimony of the rich legacy of the university and the city," said LU vicechancellor Prof Alok Kumar Rai.

Also known as Badshah Bagh

istorian late Yogesh Praveen described LU's Lal Baradari as the only red stone bldg of the Nawabi era. In his book, he wrote that Lal Baradari was the only red stone building in the Nawabi era, in the 19th century.

Also known as Badshah Bagh, the foundation of the building was laid by Nawab Ghaziuddin Haider Shah in 1814 and it was completed by his son Naseeruddin Haider Shah in 1820. It was built as a retreat for Nawab and his queens.

He said our prime focus is not just to modernise the campus with a lecture theatre complex, WiFi and other facilities, but also to conserve the on-campus historical treasures. Monuments, historical buildings and heritage sites are the rich essence of diversity and reflection of our culture, hence their protection and conversation is essential.

"Lal Baradari conservation cost is estimated at around Rs 5 crore and we are hopeful to receive funds for it under PM-USHA scheme. Once restored, we plan to develop the nearby areas as open theatre for the university's literary festival and other student-centric events," said the VC.

Lal Baradari once housed a bank for revival students and employees, a cafeteria and staff club — all of which were evacuated around a decade ago in view of building's fragile condition.

मोम-तारकोल से तराशी मूर्तियों में दिखाई 4000 वर्ष पुरानी शैली

■ शाश्वत मिश्रा

लखनऊ। चार हजार साल पुरानी डोगरा कला में मूर्तियों, कलाकृतियों को मधुमक्खी के मोम और तारकोल से तराशकर एलयू ललित कला संकाय के विद्यार्थियों ने देश-विदेश तक धमक पहुंचा दी है। ढोकरा, घड़वा कला आदि नामों से मशहूर मूर्ति निर्माण की डोगरा विधि भारत में सदियों से प्रचलित पारंपरिक धातु ढलाई तकनीक है। इस मेटल कास्टिंग कला का भारत में करीब चार हजार साल पुराना इतिहास है जिसमें एलयू के छात्र-छात्राओं ने

सरस्वती देवी, बुद्ध, हाथी, मोर, घोड़े, उल्लू आदि की मूर्तियों, कलाकृतियों को उतारा है। इस शैली की कलाकृतियों का निर्यात अमेरिका, यूरोप जैसे देशों में खूब होता है। मूर्तिकला विभाग में विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षक अजय कुमार की अगुवाई में विद्यार्थियों को डोगरा कला के बारे में बताया गया। इसके लिए डोगरा विधि से धातु ढलाई पर दो से 10 मार्च तक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था। जिस दौरान छात्रों ने मूर्तियों और कलाकृतियों का निर्माण किया। प्रशिक्षक अजय कुमार बताते हैं कि डोगरा कला भारत में

मछली, ऊंट, मोर, हाथी और कछुए की प्रतिकृति

संकायाध्यक्ष डॉ. रतन कुमार ने बताया कि एमवीए मूर्तिकला के अंकित प्रजापित ने कमल व मछली, बीएफए के हेमंत कुमार ने मात्र देवी, दृश्या अग्रवाल ने ऊंट व नाचते हुए मोर, ज्ञानेंद्र कुमार ने आदिवासी मखोटा और जानवर बनाए। एमएफए प्रिंट मेकिंग की कोमल देवी ने कछुए की गाड़ी व हाथी बनाया।

कारीगरों की सदियों से प्रचलित एक पारंपरिक धातु ढलाई तकनीक है। डोगरा कला में ही बनी



एलयू के विद्यार्थियों ने कलाकृतियां बनाई।

मोहनजोदड़ो की नर्तकी: मोहनजोदड़ो सभ्यता की प्रसिद्ध मूर्ति 'नर्तकी' का निर्माण भी डोगरा शैली

में किया गया था। यह छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में आज भी प्रचलित है। उन्हीं आदिवासियों के नाम पर इस

से 10 मार्च तक कार्यशाला का भी आयोजन हुआ

विद्यार्थियों की कलाकृतियों की विदेशों तक धमक पहुंची

मधुमवखी के मोम और तारकोल से मूर्तियां बनाई।

शैली का नाम रखा गया है। डोगरा शैली में मूर्तियों और कलाकृतियों की मांग विदेशों में भी बहुत है।